The Tiratana Vandana

Salutation to the Three Jewels
In English, Pali, and Hindi

Buddha Vandana

त्रिरत्न वन्दना

१. बुद्ध वन्दना

वे भगवान अर्हत हैं, वे सम्यक् सम्बुद्ध हैं, सभी सद्-विद्याओं और सदाचरणों से युक्त हैं, सद्गति को प्राप्त हैं, सभी लोकों के जानकार हैं, सर्वश्रेष्ठ हैं, (पथ भ्रष्ट घोडों की तरह) भटके हुए लोंगों को सही मार्ग पर ले आने वाले कुशल सारथी हैं, देव और मनुष्यों के शास्ता (आचार्य) हैं।

मैं जीवन भर के लिए उन बुद्ध की शरण जाता हूँ ॥१ ॥

भूतकाल में जो बुद्ध हुए हैं, भविष्य में जो बुद्ध होंगे व वर्तमान में जो बुद्ध हैं, मैं उन सबकी सदा वन्दना करता हूँ ॥२ ॥

अन्य कोई मेरी शरण नहीं है केवल बुद्ध ही उत्तम शरण हैं, इस सत्य वचन से मेरा जय और मंगल हो ॥३ ॥

मैं उन भगवान बुद्ध की सर्वोत्तम चरण धूलि की सिर से वन्दना करता हूँ। यदि बुद्ध के प्रति मुझ से कोई दोष हुआ हो तो बुद्ध मुझे क्षमा करें ॥४ ॥

Namo Tassa Bhagavato Arahato
Sammasambuddhassa
Namo Tassa Bhagavato Arahato
Sammasambuddhassa
Namo Tassa Bhagavato Arahato
Sammasambuddhassa

Iti'pi so bhagava araham
sammasambuddho
vijjacaranasampanno sugato
lokavidu, anuttaro
purisadammasarathi
sattha devamanussanam
buddho bhagava'ti

Buddham jivitapariyantam
saranam gacchami
Ye ca Buddha atita ca
Ye ca Buddha anagata
Paccuppanna ca ye Buddha
Aham vandami sabbada
N'atthi me saranam annam
Buddho me saranam varam
Etena saccavajjena
Hotu me jayamangalam

Such indeed is He, the Richly Endowed: the Free, the Fully and Perfectly Awake, Equipped with Knowledge and Practice, the Happily Attained, Knower of the Worlds, Guide Unsurpassed of Men to Be Tamed, the Teacher of Gods and Men, the Awakened One Richly Endowed.

All my life I go for Refuge to the Awakened One.
To all the Awakened of the past,
To all the Awakened yet to be,
To all the Awakened that now are,
My worship flows unceasingly.
No other refuge than the Wake, Refuge supreme, is there for me.
O by the virtue of this truth,
May grace abound, and victory!

Dhamma Vandana

२.धर्म वन्दना

भगवान का धर्म अच्छी तरह कहा गया है । वह सही दृष्टि प्रदान करने वाला है ।.वह तत्काल फल देने वाला है । कालान्तर में नहीं, अपितु 'आओ और इसे देख लो ' यह कहलाने के योग्य है । यह निर्वाण तक पहूँचाने वाला है और विद्वानों द्वारा जानने के योग्य है ।

मैं जीवन भर के लिए धर्म की शरण जाता हूँ ॥१ ॥

मैं भूतकाल, भविष्य व वर्तमान के बुद्धों द्वारा उपदिष्ट धर्मों की सदा वन्दना करता हूँ ॥२ ॥

अन्य कोई मेरी शरण नहीं है, केवल धर्म ही उत्तम शरण है । इस सत्य वचन से मेरा जय और मंगल हो ॥३ ॥

मैं दोनों प्रकार के (व्यवहारिक एवम् परमार्थिक) श्रेष्ठ धर्मों की सिर से वन्दना करता हूँ । यदि धर्म के प्रति मुझसे कोई दोष हुआ हो तो धर्म मुझे क्षमा करें ॥४ ॥

S vakkhato bhagavata Dhammo
sanditthiko akaliko ehipassiko
opanayiko paccatam
veditabbo vinnuhi'ti
Dhamman jivitapariyantam
saranam gacchami
Ye ca Dhamma atita ca
Ye ca Dhamma anagata
Paccuppanna ca ye Dhamma
Aham vandami sabbada
N'atthi me saranam annam
Dhammo me saranam varam
Etena saccavajjena
Hotu me jayamangalam

Well communicated is the teaching of the Richly Endowed One, Immediately Apparent, Perennial, of the Nature of a Personal Invitation, Progressive, to be understood individually, by the wise.
All my life I go for Refuge to the Truth.
To all the Truth-Teachings of the past,
To all the Truth-Teachings yet to be,
To all the Truth-Teachings that now are,
My worship flows unceasingly.
No other refuge than the Truth, Refuge supreme, is there for me.
O by the virtue of this truth,
May grace abound, and victory!

Sangha Vandana

३. संघ वंदना

भगवान का श्रावक संघ (शिष्य संघ) उत्तम मार्ग पर सुप्रिष्ठित है । भगवान का श्रावक संघ सरल मार्गपर प्रतिष्ठित है, भगवान का श्रावक संघ न्याय मार्ग पर आरूढ है, भगवान का श्रावक संघ उचित मार्ग पर आरूढ है ।

भगवान का यह श्रावक संघ चार [१] प्रकार से पहुंचे हुए युग्मों और आठ [२] प्रकार के श्रेष्ठ पुरूषों से विभूषित है ।

यह आमन्त्रित करने के योग्य है, यह पाहुना(अतिथ्य सत्कार) बनाने योग्य है, यह दान देने योग्य है, यह हाथ जोड वंदन करने योग्य हैं, यह लोक में पुण्य का सर्वोत्तम क्षेत्र है और सभी जनो का सच्चा साथी है ॥१ ॥

मैं जीवन भर के लिए ऐसे संघ की शरण जाता हूँ । अतीत में जो ऐसे संघ रहे, भविष्य में जो ऐसे संघ होंगे और वर्तमान में जो ऐसे संघ है मैं उन सबकी वंदना करता हूँ ॥२ ॥

अन्य कोई मेरी शरण नहीं है केवल संघ ही उत्तम शरण हैं, इस सत्य वचन से मेरा जय और मंगल हो ॥३ ॥

मै तीन प्रकार (काया, वाचा, मन) से उत्तम और पवित्र उस संघ की सिर से वंदना करता हूँ । यदि संघ के प्रति अनजाने में मुझ से कोई गलती हुई हो तो संघ मुझे माफ करें ॥४ ॥

---

१) श्रावक संघ के चार युग्म (जोडे) - श्रोतापत्ती मार्ग और फल प्राप्त, सकृदागामी मार्ग व फल प्राप्त, अनागामी मार्ग फल प्राप्त तथा अर्हंत् मार्ग व फल प्राप्त ।

२) श्रावक संघ के आठ पुरूषः- १. स्त्रोत पत्ती मार्गप्राप्त २. स्त्रोतापत्ती फल प्राप्त ३. सकृदागामी मार्ग प्राप्त ४. सकृदागामी फल प्राप्त ५. अनागामी मार्ग प्राप्त ६. अनागामी फल प्राप्त ७. अर्हत् मार्ग प्राप्त ८. अर्हत्फल प्राप्त ।

Supatipanno bhagavato
savakasangho
ujupatipanno bhagavato
savakasangho
nayapatipanno bhagavato
savakasangho
samicipatipanno bhagavato
savakasangho yadidam
cattari purisayugani
atthapurisapuggala
Esa bhagavato
savakasangho
ahuneyyo, pahuneyyo,
dakkhineyyo anjalikaraniyo
anuttaram
punnakkhettam lokassa'ti
Sangham jivitapariyantam
saranam gacchami
Ye ca Sangha atita ca
Ye ca Sangha anagata
Paccuppanna ca ye Sangha
Aham vandami sabbada
N'atthi me saranam annam
Sangho me saranam varam
Etena saccavajjena
Hotu me jayamangalam

Happily proceeding is the fellowship of the Hearers of the Richly Endowed One, uprightly proceeding ... methodically proceeding ... correctly proceeding,... namely, these four pairs of Individuals, these eight Persons. This fellowship of Hearers of the Richly Endowed One is worthy of worship, worthy of hospitality, worthy of offerings, worthy of salutation with folded hands, an incomparable source of goodness to the world.
All my life I go for Refuge to the Fellowship.
To all the Fellowships that were,
To all the Fellowships to be,
To all the Fellowships that are,
My worship flows unceasingly.
No refuge but the Fellowship,
Refuge supreme, is there for me.
O by the virtue of this truth,
May grace abound, and victory!